पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 16.07.2019 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील:
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली—110007, आई. एफ. एस. कोड-**SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9868051444** पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित। — अनिल आर्य

वर्ष-36 अंक-04 श्रावण-2076 दयानन्दाब्द 196 16 जुलाई से 31 जुलाई 2019 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.07.2019, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

लीला सीरियल पर अविलम्ब प्रतिबंध लगाया जाये— राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 7 जुलाई, 2019, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद नई दिल्ली की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य की अध्यक्षता में आर्य समाज कबीर बस्ती पुरानी सब्जी मंडी दिल्ली में संपन्न हुई। बैठक में एम जे अकबर के बेटे प्रयाग अकबर द्वारा लिखी पुस्तक 'लीला' पर आधारित सीरियल लीला पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई। यह Netflix पर दिखाया जा रहा है जिसकी निर्देशक दीपा मेहता हैं। इसमें पुरातन आर्य संस्कृति को तोड़ मरोड़ कर दिखाया जा रहा है। जैसे आर्य लोग बाहर से आये थे, वह आक्रमण कारी थे ,वह गौ का मांस खाते थे यह सब भारतीय संस्कृति को बदनाम करने का षडयंत्र है जिससे नई पीढ़ी अपने इतिहास पर गर्व न कर सके। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने केन्द्र सरकार से मांग की है की लीला पुस्तक व सीरियल पर अविलम्ब प्रतिबंध लगाया जाए इससे समस्त हिन्दू समाज की भावनाएं आहत हो रही हैं।

परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा की परिषद आगामी 9 अगस्त से 18 अगस्त तक 'युवा संस्कार अभियान' चलायेगी जिसमे हवन यज्ञ करके 12 से 25 वर्ष तक के हजारों युवाओं को यज्ञोपवीत धारण करवा कर अपने आर्य संस्कृति के गौरव पूर्ण इतिहास के बारे मैं बताया जायेगा।

परिषद ने अभी 21 युवा व्यक्तित्व विकास शिविर ग्रीष्मकालीन अवकाश में लगाये और चरित्र निर्माण पर बल दिया। बैठक में योगेन्द्र शास्त्री (जींद), प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), रामकृष्ण शास्त्री, (बहरोड़,), विवेक अग्निहोत्री (नोएडा), ओम सपरा (प्रधान उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल), धर्मपाल आर्य, सुरेश आर्य, प्रवीन आर्या, यशोवीर आर्य, सौरभ गुप्ता, माधव सिंह आर्य आदि ने भी अपने विचार रखे। बैठक में आगामी 26 जुलाई को जन्तर मंतर पर 'कारगिल विजय दिवस' और रविवार 1 सितंबर को 41वां राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन योग निकेतन पंजाबी बाग दिल्ली में करने का निश्चय हुआ।

लीला सीरियल पर प्रतिबंध लगाने की जन्तर मंतर पर मांग उठी

शुक्रवार 12 जुलाई 2019, राष्ट्र निर्माण पार्टी के तत्वावधान में एम जे अकबर के बेटे प्रयाग अकबर द्वारा लिखित 'लीला' पुस्तक पर आधारित लीला सीरियल पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर नई दिल्ली के जन्तर मंतर पर प्रदर्शन किया गया।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा की आज हिन्दू भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है उसे सहन नहीं किया जायेगा। उन्होंने कहा कि हम राष्ट्र व्यापी आंदोलन चलायेगे। कार्यक्रम का संचालन पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ आनंद कुमार ने किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा की लीला सीरियल आर्यो की पुरातन संस्कृति को बदनाम करने की साजिश है इसे सहन नहीं किया जायेगा उन्होंने कहा की आर्य समाज भारतीय संस्कृति का रक्षक है लीला सीरियल व पुस्तक पर प्रतिबंध लगाया जाए। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि आर्य यहाँ के मूल निवासी थे और वेद गौ हत्यारे को सीसे की गोली से मारने का आदेश देते है। आर्य लोग गाय के उपासक व देवता मानते थे। वेद भी नारी सम्मान की बात करते है इस पुस्तक में तोड मरोड़ कर आर्यो को बदनाम करने का दुस्साहस किया गया है जो निन्दनीय है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्य वेश ने कहा की आर्य शब्द का तात्पर्य श्रेष्ठ है इस तरह की आर्य हिन्दू जाती को बदनाम करने की साजिश किसी कीमत पर आर्य समाज सहन नहीं करेगा।

इस अवसर पर शिव कुमार मदान, अरुण आर्य,अरविन्द मिश्रा, प्रवीन आर्या, धर्मवीर पहलवान, देवदत्त आर्य, दिक्शेन्दर आर्य आदि उपस्थिति थे।

हमारे पुरोहित-पुजारियों का कर्तव्य सनातन वैदिक धर्म का सुनियोजित प्रचार एवं संगठन को सुदृढ़ करना है

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वैदिक धर्म ही सनातन धर्म है क्योंकि यह हर युग एवं कल्प–कल्पान्तर के मनुष्यों का सद्धर्म रहा है व वर्तमान में भी है। वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है जो अमैथुनी सृष्टि में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा की आत्माओं में ईश्वर द्वारा अन्तःप्रेरणा के द्वारा दिया गया था। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद की कोई भी बात असत्य, अप्रमाणिक तथा सृष्टिक्रम के विरुद्ध नहीं है। वेद विद्या के ग्रन्थ हैं और अविद्या व अज्ञान आदि से सर्वथा मुक्त है। वेद में इतिहास किंचित भी नहीं है। वेद के सभी शब्द व पद धातुज व यौगिक हैं जिनकी उत्पत्ति व अर्थ वेदांग अर्थात् वैदिक व्याकरण के नियमों से प्राप्त होता है। वेदों की ही पुराण संज्ञा है। वर्तमान में जो पुराण उपलब्ध होते हैं वह महाभारत युद्ध के सहस्रों वर्ष पश्चात लिखे गये। पुराणों की अनेक बातें अविश्वसनीय एवं वेद विरुद्ध होने सहित परस्पर विरोधी भी हैं। शिव–पुराण भगवान शिव की प्रशंसा करता है तो दूसरी ओर अन्य पुराणों में उनकी आलोचना व विरोधी स्वर उपलब्ध होते हैं और अपने उनमें अपने इष्ट देवों की प्रशंसा है। ऐसा ऋषि दयानन्द सहित आर्य विद्वानों का मत है जिन्होंने पुराणों का गहन अध्ययन किया था। पुराणों की वास्तविकता का ज्ञान आर्य विद्वान पं0 मनसाराम वैदिक तोप जी की पुस्तकों "पौराणिक पोल प्रकाश" एवं "पौराणिक पोप पर वैदिक तोप" से भी सहज ही होता है। इन ग्रन्थों में पुराणों की अवैदिक मान्यताओं का दिग्दर्शन कराने सहित उनकी सत्यता की परीक्षा भी की गई है।

हमारा वर्तमान पौराणिक सनातनी मत ईश्वर–प्रदत्त वेदमत का विकृत रूप है जिसमें अनेक अन्धविश्वास, वेदविरुद्ध अप्रामाणिक कथन एवं अविश्वसनीय इतिहास एवं कथन विद्यमान हैं। वेदों में कहीं पर भी मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। यदि वेदों में मूर्तिपूजा का विधान होता तो 16 नवम्बर, 1869 ई0 को काशी में ऋषि दयानन्द से 30 सनातनी विद्वानों के शास्त्रार्थ में सनातन विद्वान ऋषि दयानन्द को वह विधान दिखा देते और इस समस्या का समाधान हो जाता। फलित ज्योतिष का विधान भी वेदों में कहीं नहीं है। फलित ज्योतिष का विधान वेदानुकूल भी नहीं है। इसी प्रकार से ईश्वर के अवतार लेने की मान्यता भी वेद प्रतिपादित न होकर हमारे कुछ मध्यकालीन पुराणकारों व वेद विरोधियों की दी हुई प्रतीत होती है जो कि तर्क एवं युक्तियों से बुद्धिसंगत सिद्ध नहीं होती। ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ में पुराण की वेदविरुद्ध मान्यताओं का युक्ति एवं तर्क के साथ खण्डन किया है। इससे हम सत्यासत्य का निर्णय कर सकते हैं।

वर्तमान समय में हमारा धर्म हमारे मन्दिरों के पुजारियों सहित यज्ञ एवं संस्कार कराने वाले पुरोहितों पर निर्भर प्रतीत होता है। इन पुजारी एवं पुरोहितों से धर्मभीरू जनता की अपेक्षा होती है कि यह उन्हें ईश्वर, जीवात्मा, सृष्टि की उत्पत्ति के उपादान कारण प्रकृति का सत्य स्वरूप समझायें जिससे लोग ईश्वर व आत्मा को यथार्थ रूप में जान सकें। ईश्वर की उपासना व भक्ति का उद्देश्य भी वेद प्रमाणों एवं युक्तियों से समझाया जाना चाहिये। मनुष्य जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य क्या है? यह भी सभी धर्म में विश्वास रखने वाले श्रद्धालुओं को ज्ञात होना चाहिये। उपासना की एक ही विधि हो सकती है या इसकी अनेक विधियां हो सकती हैं? विधि की सत्यता को जांचने की कसौटियां क्या–क्या हैं? वर्तमान में उपासना व मूर्तिपूजा की जो विधियां हमारे मन्दिरों में प्रयोग में लायी जाती हैं, उसका आधार और प्रमाण क्या है? क्या प्रचलित विधियों से भक्ति, उपासना या पूजा करने से आज तक किसी भक्त, पुजारी व धर्मप्रेमी को ईश्वर के दर्शन, साक्षात्कार, साक्षात–अनुभव व प्राप्ति हुई है? क्या किसी पूजा करने वाले का कोई ऐसा कार्य सम्पन्न हुआ है जो पूजा न करने वालों का नहीं होता है? इसका यदि कहीं एक भी प्रमाण है तो वह दिया जाना चाहिये। यदि मूर्ति पूजा से हमारी कामनायें व इच्छायें पूर्ण हो सकती हैं तो वही मूर्ति रूपी भगवान अपनी भोजन, वस्त्र एवं स्वच्छता आदि की आवश्यकताओं को स्वयं पूरी क्यों नहीं कर लेते? क्यों वह मन्दिरों के पुजारियों पर निर्भर रहते हैं? ऐसे ही कुछ प्रश्न बालक दयानन्द के मन में भी उत्पन्न हुए थे जिस कारण उन्होंने घर–परिवार छोड़कर सत्यधर्म की खोज की थी और उसी का परिणाम उनका वैदिक धर्म का प्रचार, सत्यार्थप्रकाश, वेदभाष्य आदि ग्रन्थों का लेखन व प्रकाशन एवं समाज सुधार विषयक अन्य कार्य हैं।

वेदों में ईश्वर को सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान कहा गया है। क्या मन्दिर की मूर्ति में भी सर्वशक्तिमान होने का गुण होता है? यदि नहीं है तो फिर वह ईश्वर कैसे है? यदि है तो फिर हमारे सोमनाथ मन्दिर, मथुरा के द्वारकाधीश व कृष्ण जन्म भूमि के मन्दिर, काशी विश्वनाथ तथा अयोध्या में राम जन्मभूमि मन्दिरों आदि सहस्रों मन्दिरों का विधर्मियों ने ध्वंस क्योंकर कर दिया? ईश्वरीय शक्ति से सम्पन्न मूर्तियां अपनी व अपने भक्तों की रक्षा क्यों नहीं कर सकीं थी? जब नहीं कर सकीं तो आज भी कैसे कर सकती हैं? यदि मूर्तिपूजा करने व उस पर चढ़ावा चढ़ाने से भक्तों की इच्छायें व कामनायें पूरी होती हैं तो मूर्तिपूजा न करने व उनका ध्वंस करने वाली जातियों के लोगों की इच्छायें व कामनायें कौन सा ईश्वर व भगवान पूरी करता है? क्या हमारे विरोधियें का ईश्वर हमारे ईश्वर से पृथक व अन्य है? हम समझते हैं कि हमारे मन्दिरों के पुजारियों व पुरोहितों को इन सब बातों पर वेदों के प्रकाश में अवश्य विचार करना चाहिये। उन्हें असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण करना चाहिये। वेदों के अनुसार सत्य का ग्रहण ही धर्म और असत्य का त्याग ही अधर्म है। हमने क्योंकि वेदों की शिक्षाओं को छोड़कर वेदविरुद्ध एवं अविद्यायुक्त ग्रन्थों को अपना आधार बनाया है, इसी कारण महान आर्य हिन्दू जाति का पतन हुआ।

इतिहास एवं वेदज्ञान से शिक्षा लेकर यदि सभी हिन्दू एवं आर्यसमाजी वर्तमान में भी जातिवाद और अन्धविश्वासों को छोड़कर संगठित हो जायें, एक भाव, एक सुख–दुःख, एक मन, एक विचार वाले हो जायें, जैसा कि ऋग्वेद के संगठन सूक्त में कहा भी गया है, तो आज भी हम महाभारत व उससे पूर्व की शक्ति से सम्पन्न होकर अपने सभी विरोधी व शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा होना तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि हम अविद्या व अज्ञान के कार्यों को छोड़कर अविवादित वैदिक धार्मिक विचारधारा को न अपनायें और हममें धर्म के नाम पर किसी प्रकार का भेदभाव हमारे किसी व्यक्ति में न हो। जो भी मनुष्य ईश्वर, वेद और ऋषियों सहित राम, कृष्ण आदि की परम्पराओं को मानता है, वह हमारा अपना बन्धु–बान्धव एवं सगा–सम्बन्धी है। उसे हमें अपने कुटुम्ब का ही सदस्य मानना चाहिये। किसी से भी किसी प्रकार का छुआछूत एवं भेदभाव नहीं होना चाहिये। हमारे धार्मिक विचारों के समान विचारों वाला व्यक्ति यदि कभी किसी भी प्रकार के शारीरिक व अन्य संकट अथवा कष्ट में आता हैं तो हमारे सबके हाथ उस बन्धु और उसके परिवार की सहायता के लिये आगे बढ़ने चाहियें। ऐसी भावनायें वेद पढ़कर विकसित होती हैं।

हमारे सभी पुजारियों तथा पुरोहितों को समान रूप से वेदों का अध्ययन करना चाहिये। उनको वेदांग मुख्यतः संस्कृत व्याकरण की अष्टाध्यायी–महाभाष्य पद्धति का ज्ञान होना चाहिये। यदि यह लोग वेदों का अध्ययन नहीं कर सकते तो ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य सहित संस्कारविधि, आर्याभिविनय एवं आर्यविद्वानों के वेदानुकूल वा वेदसम्मत ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। इस अध्ययन को करने के बाद हमारे धर्मबन्धुओं को समाज में घर–घर जा कर वैदिक धार्मिक मान्यताओं का प्रचार करना चाहिये। हमारे पुजारियों एवं पुरोहितों को भक्तों की अपने मन्दिरों व यज्ञशालाओं में प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये अपितु अपने आसपास के एक–एक घर में जाकर ईश्वर व वेद का सत्य सन्देश देना चाहिये। मन्दिर में बैठकर भक्तों से चढ़ावा प्राप्त करना मात्र धर्म नहीं है अपितु यह आज के युग में पुरुषार्थहीनता की निशानी है। यह वेद विरुद्ध कार्य है। इसी कारण हमारा धर्म एवं समाज कमजोर होता जा रहा है। यदि हमारे सभी पुजारी व वैदिक पुरोहित भी बिना लोगों के बुलायें और बिना दक्षिणा के प्रलोभन के सनातन वैदिक धर्म को मानने वाले बन्धुओं के घर–घर जा कर वैदिक धार्मिक मान्यताओं का लोभ रहित होकर प्रचार करेंगे, तभी धर्म की रक्षा हो सकती है। हम यदा–कदा देखते रहते हैं कि वैदिक धर्म की आस्थाओं पर कुछ लोग कुठाराघात करते हैं और वोट बैंक की नीति व व्यवस्था के दोषों के कारण हमें न्याय प्राप्त नहीं होता। हमारे मन्दिर अपमानित किये जाते हैं, यदा–कदा हमें पीटा जाता है और हमारे देश के लोग हमें ही संयम रखने को कहते हैं। जो हिंसा फैलाते हैं व ऐसी प्रवृत्ति के हैं, उनके विरुद्ध कुछ कहने का साहस हमारे बुद्धिजीवियों व नेताओं को नहीं होता। अतः हमें अपनी रक्षा स्वयं करनी है। यह तभी सम्भव है कि जब हम अपने सभी अन्धविश्वासों व सामाजिक बुराईयों को सर्वथा छोड़ दें। ऋषि दयानन्द ने हमें यही मार्ग बताया था। यह दुःख की बात है कि हमने अपने धार्मिक एवं सामाजिक महारोग की यथार्थ व हितकारी ओषधि का सेवन नहीं किया अपितु अपनी मलिन बुद्धि के कारण उस महौषधि का त्याग ही किया है। आज भी हमारे पास अवसर है कि हम अपनी सभी बुराईयों, कमजोरियों, लोभ व महत्वाकांक्षाओं को भुलाकर आपस में इस प्रकार संगठित हों जिस प्रकार से अनेक नदियों का जल मिलाने पर एकरस व एकरूप हो जाता है। विभिन्न नदियों के मिले हुए जल को किसी भी वैज्ञानिक व अन्य विधि से अलग–अलग नहीं किया जा सकता। ऐसा ही हम सब वैदिक, सनातन, पौराणिक बन्धुओं को होना चाहिये। हम भी आपस में नदियों के जल के समान अपने हृदयों व मन को ऐसा मिलाये कि हम अनेक शरीर एक आत्मा के समान हो जायें और सभी विधर्मियों व विरोधियों को एक व संगठित दृष्टिगोचर हों। किसी में हमें छेड़ने व हानि पहुचानें का साहस नही होना चाहिये।

हम आर्य पुरोहितों के विषय में भी यही सोचते हैं कि उनका कार्यक्षेत्र असीमित है। वह अपने आप को समाज मन्दिर व यजमानों के घरों पर यज्ञ एवं संस्कार कराने तक ही सीमित न रखें अपितु स्वधर्मियों का प्रत्येक घर एवं उसके प्रत्येक व्यक्ति में वैदिक धर्म का प्रकाश करना हमारा उद्देश्य एवं लक्ष्य होना चाहिये। यज्ञ करवाने वाले व्यक्तियों के प्रति वह ऐसा व्यवहार करें कि जिससे किसी यजमान को उनके कार्य एवं व्यवहार से कोई शिकायत न हो। लोभी स्वभाव का परिचय तो कदापि न मिले। निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी अपने घरों पर पुरोहितों को आमंत्रित कर यज्ञ एवं संस्कार करा सके। यदि हम पुरुषार्थ करेंगे तो जीवन जीने के साधन तो भगवान से स्वतः प्राप्त होंगे ही। लोगों के घर–घर जाकर बिना लोभ के प्रचार करने से लोगों में जागृति आ सकती है। गुपचुप रीति से जो धर्मान्तरण नाना रूपों में योजनाबद्ध होकर किया जा रहा है, वह भी थमेगा। आज स्थिति यह है कि निर्धन तो क्या धनवान व्यक्ति भी यज्ञ एवं संस्कार कराते हुए असहज दीखते हैं। ऐसा हम अपने कुछ परिचितों से वार्तालाप के आधार पर कह रहे हैं। इसी कारण समाज में लोग यज्ञ आदि नहीं कराते या बहुत आवश्यकता होने पर ही कराते हैं। हम कितना कहें कि आप बच्चों के जन्म दिन, विवाह की वर्षगांठ एवं अन्य शुभ अवसरों पर अपने घरों पर यज्ञ एवं संस्कार आदि कराया कीजिये, परन्तु इसका प्रभाव समाज के एक प्रतिशत लोगों पर भी नहीं होता।

हमारी समाजों के अधिकारियों को भी आर्यसमाज का प्रचार मन्दिर की चारदिवारी तक सीमित न रखकर विभिन्न मुहल्लों व सार्वजनिक स्थानों पर आयोजित करना चाहिये। हमारे विद्वानों को अपनी दक्षिणा आदि का त्याग कर ऐसे कार्यों में सहयोग करना चाहिये। आजकल हमारे विद्वान बिना पूर्व निर्धारित आमंत्रण के कहीं आते–जाते नहीं है, भले ही वह अपने घरों पर हों और उनके पास अवकाश भी हो। हमारे सभी बन्धुओं को हिन्दू व आर्यों की जनसंख्या में निरन्तर हो रही कमी पर भी विचार करना चाहिये और इस पर उचित निर्णय लेकर उसका भी जन–जन में प्रचार करना चाहिये। समय का भौतिक अस्तित्व न होने पर भी यह ऐसा है कि एक बार हाथ से निकल जाने पर कितनी भी कीमत देकर वापिस लौटाया नहीं जा सकता। इस पर विचार करने सहित ध्यान देना चाहिये।

देश व समाज के हित में हमने अपनी सामान्य व साधारण भाषा में ऋषि दयानन्द जी के सन्देश को दोहराने का प्रयास किया है। यदि लेखकी कोई बात किसी बन्धु को बुरी लगे तो हम खेद व्यक्त करते हैं। हिन्दू व आर्य जाति की रक्षा व हित के लिये ही यह पंक्तियां लिखी गईं हैं।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के शिविर ऐमिटी सैक्टर-44, नोएडा में युवकों का सुन्दर दृश्य

करनाल शिविर में आर्य युवकों ने ली जल बचाओ की शपथ

रविवार, 23 जून 2019, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् करनाल शाखा के तत्वावधान में आर्य समाज, सैक्टर-6, करनाल में आयोजित शिविर समापन समारोह में जल बचाओं का संकल्प लेते हुए-आर्य नेता सतेन्द्रमोहन कुमार, शान्तिप्रकाश आर्य, आनन्दसिंह आर्य, अनिल आर्य, नरेन्द्र आहुजा विवेक, स्वतन्त्र कुकरेजा, रोशन आर्य व हरेन्द्र चौधरी व सामने शिविरार्थी आर्य युवक।

ऐमिटी शिविर में मेजर जनरल (रिटा.) आर.एस.भाटिया का अभिनन्दन

रविवार, 16 जून 2019, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय शिविर के समापन समारोह में मेजर जनरल (रिटा.) आर.एस.भाटिया व श्रीमती प्रोमिला भाटिया का अभिनन्दन करते अनिल आर्य, अमीरचन्द रखेजा, प्रवीन आर्या व गायत्री मीना। द्वितीय चित्र-दीप प्रज्जवलित करते राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य, साथ में-श्री आनन्द चौहान, मृदुला चौहान, डा. डी. के. गर्ग, गायत्री मीना व प्रवीन आर्य।

शिविर समापन के अवसर पर ऐमिटी शिक्षण संस्थान के निदेशक आनन्द चौहान, मृदुला चौहान, अनिल आर्य के साथ परिषद् के कर्मठ शिक्षकगण।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता का अभिनन्दन करते अनिल आर्य व सुरेश आर्य, साथ में हिमांशु वर्मा, माधवसिंह आर्य, प्रदीप आर्य, त्रिलोक आर्य व अरूण आर्य। द्वितीय चित्र में सर्वश्रेष्ठ तीन शिविरार्थीयों को पुरस्कृत करते मृदुला चौहान व आनन्द चौहान।

श्रावणी पर्व पर परिषद् चलायेगी युवा संस्कार अभियान

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने श्रावणी पर्व पर शनिवार, 10 अगस्त से 18 अगस्त 2019 तक "युवा संस्कार अभियान" चलाने का निश्चय किया है। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने सभी प्रान्तीय, जिला व मण्डल अधिकारियों से अपील की है कि वह 12 वर्ष से 25 वर्ष तक के युवकों को वैदिक विचारधारा से जोड़ने के लिय अपने अपने क्षेत्र में कार्यक्रम करें और नयी पीढ़ी को आर्य समाज की विचारधारा के साथ जोड़े। उन्होंने आर्य समाजों के अधिकारियों से भी अपील की है कि वह श्रावणी पर्व पर वेद कथा में नये किशोरों व युवकों की सहभागिता भी निश्चित करें तभी श्रावणी पर्व मनाना सार्थक होगा।

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती सरोज अग्रवाल (धर्मपत्नि श्री अरूण अग्रवाल, सरस्वती प्रेस) का निधन।
2. श्रीमती रेखा गुप्ता (धर्मपत्नि सतीश चन्द गुप्ता, आगरा) का निधन।
3. श्रीमती महावीरी देवी (चाची रामकुमारसिंह आर्य, दुर्गापुरी) का निधन।
4. श्रीमती कांता वर्मा (मेधराज बिस्कुट क.) का निधन।

आर्य कन्या शिविर दिल्ली व जींद में शिविर सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में गीता भारती स्कुल, अशोक विहार,फेज–2 ,दिल्ली में आयोजित शिविर में बालिकायें कराटे प्रदर्शन करती हुई। बुधवार, 20 जून 2019, आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर जीन्द के समापन समारोह में राजेश आर्य(जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी जीन्द) का अभिनन्दन करते अनिल आर्य,प्रधान शिक्षक सूर्यदेव आर्य आदि।

सुदर्शन न्युज ने जन्तर मन्तर पर जनसंख्या नियन्त्रण कानुन बनाने की मांग की

वीरवार, 11 जुलाई 2019,सुदर्शन न्युज की ओर से नई दिल्ली के जन्तर मंतर पर जनसंख्या नियन्त्रण कानुन बनाने की मांग को लेकर विशाल प्रदर्शन किया गया । चित्र में–केन्द्रीय मंत्री गिरीराजसिंह सम्बोधित करते हुए । मंच पर परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य,अनिल चौधरी व सुदर्शन न्युज के मुख्य सम्पादक सुरेश के. चव्हान । द्वितीय चित्र में सुरेश के चव्हान सम्बोधित करते हुए।

बागेश्वर (उत्तराखण्ड) में शिविर सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् बागेश्वर के तत्वावधान में आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन दिनांक 20 मई से 28 मई 2019 तक सैनिक सी.सै. स्कुल,बागेश्वर में सम्पन्न हुआ । सामुहिक चित्र में शिविर अध्यक्ष आर्य नेता गोबिन्दसिंह भण्डारी,प्रि.मदनमोहन जोशी,प्रि.लक्ष्मी टाकुली,प्रयागसिंह भण्डारी,राजेन्द्रसिंह भण्डारी,अशोक कुमार भण्डारी व व्यायाम शिक्षक योगेन्द्र शास्त्री व हिमांशु आर्य । दुर्गम पहाड़ों पर शिविर का आयोजन बहुत कठिन कार्य है,साधनों का यहां सर्वदा अभाव रहता है,अतः शिविर के सफल आयोजन के लिये आयोजको को हार्दिक बधाई।

ओ३म्

स्थापना 3 जून 1978

जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम ...

यदि आप आर्य युवा शक्ति की कार्यप्रगति की एक झलक देखना चाहते हैं तो अवश्य पधारें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

ओ३म्
बलमुपास्व

41 वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन

अध्यक्षताः डॉ. अशोक कुमार चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

सानिध्यः स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार, 1 सितम्बर 2019, प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक

स्थानः योग निकेतन सभागार, 30–ए/78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–26

यज्ञः प्रातः 9.00 से 10.00 बजे तक – ब्रह्माः आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी

विशेष आकर्षण

राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं धारा 370, समान अचार संहिता, गौ रक्षा, जनसंख्या नियन्त्रण कानून में आर्य समाज की भूमिका पर वैदिक विद्वानों के ओजस्वी विचार
देश के विभिन्न प्रान्तों से चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम

प्रातः राशः प्रातः 8 से 10 तक, ऋषि लंगर 1 से 2 तक, जलपानः सायं 5.00 से 5.30 तक

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

केन्द्रीय कार्यालयः आर्य समाज, टी–176–177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली–110007
E-mail: aryayouth@gmail.com, dkbhagat@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com
join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/ दूरभाषः 9868051444,9958889970, 7703922101

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970